नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

पश्चिमी पाखंड के बीच भारत का शांति संदेश

सोमवार को हुई रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की बातचीत ने अंतरराष्ट्रीय राजनीति में कई स्पष्ट संकेत छोड़े. पुतिन ने मोदी को सीधे अलास्का में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप से हुई अपनी वार्ता की जानकारी दी. यह दर्शाता है कि रूस भारत को केवल 'सहयोगी' नहीं, बल्कि 'रणनीतिक भरोसेमंद साझेदार' मानता है. इस बातचीत में सबसे महत्वपूर्ण बिंदु रहा, यूक्रेन युद्ध. प्रधानमंत्री मोदी ने दो टूक कहा कि युद्ध बंद होना चाहिए. यह संदेश केवल रूस के लिए नहीं था, बल्कि उन पश्चिमी ताकतों के लिए भी था जो शांति का ढोंग करते हुए हथियारों की आपूर्ति कर इस युद्ध को लंबा खींच रहे हैं. अमेरिका और यूरोप का असली चेहरा यही है—वे लोकतंत्र और मानवीय मूल्यों की बातें करते हैं, लेकिन हथियार उद्योग की तिजोरियां भरने के लिए संघर्ष को जिंदा रखते हैं.

भारत की यह साफ़ नीति है कि किसी भी संघर्ष का हल बातचीत और कूटनीति से निकलेगा, न कि पश्चिमी ताकतों की सैन्य हवस से. यही वजह है कि मोदी ने विश्व मंच से लेकर द्विपक्षीय वार्ताओं तक बार-बार यही रुख दोहराया है. यह साहस किसी पश्चिमी देश ने नहीं दिखाया. अमेरिका की नीति साफ है कि 'अपना हित पहले, बाकी सब बाद में'. लेकिन भारत का संदेश है, विश्व शांति पहले, और भारत का हित उसी में सुरक्षित. भारत और रूस द्विपक्षीय सहयोग की चर्चा में भी एक तीखा संकेत छिपा है. जब पश्चिम रूस पर प्रतिबंधों की दीवार खड़ी कर उसे अलग-थलग करने में लगा है, भारत ऊर्जा, रक्षा और तकनीकी साझेदारी के जरिए यह जता रहा है कि उसकी विदेश नीति किसी ब्लॉक की गुलाम नहीं है. भारत न तो अमेरिका का पिछलग्गू है, न ही यूरोप की कठपुतली.

आज का यथार्थ यह है कि अमेरिका और यूरोप के दोहरे मानदंड अब उजागर हो चुके हैं. इराक, अफगानिस्तान और लीबिया को बर्बाद करने वाले वही देश अब यूक्रेन के नाम पर 'मानवता' का उपदेश दे रहे हैं. चीन की विस्तारवादी चालों पर उनकी चुप्पी और रूस के खिलाफ उनकी चीख—इनके पाखंड को और उजागर करती है. ऐसे माहौल में भारत की आवाज़ विश्व राजनीति का संतुलन बनकर उभर रही है. पुतिन का मोदी से संवाद करना इस बात की गवाही है कि अब पश्चिम चाहे जितनी शोर-शराबा करे, वैश्विक समीकरण में भारत को नज़रअंदाज़ करना नामुमकिन है. कुल मिलाकर भारत अब न सिर्फ़ विश्व राजनीति में मध्यस्थ है, बल्कि नैतिक नेतृत्व का प्रतीक भी है. पश्चिमी हथियार उद्योग की लूट और अमेरिकी दबाव की राजनीति के बीच भारत का यह साहसिक संदेश—'युद्ध बंद हो, शांति शुरू हो'—आने वाले वर्षों में नई विश्व व्यवस्था की आधारशिला साबित हो सकता है.

दरअसल आज अंतरराष्ट्रीय राजनीति बहुध्रुवीय विश्व की ओर बढ़ रही है. अमेरिका और यूरोप की भूमिका अब पहले जैसी सर्वशक्तिमान नहीं रही. चीन अपनी आक्रामक रणनीति से वैश्विक चिंता का विषय है. ऐसे समय में भारत की 'रणनीतिक स्वायत्तता' (स्ट्रैटेजिक ऑटोनॉमी) ही उसकी सबसे बड़ी ताक़त है. पुतिन-मोदी वार्ता इसी स्वायत्तता का प्रतीक है कि जहां भारत रूस से संवाद करता है, अमेरिका से सहयोग करता है और यूरोप से साझेदारी निभाता है, लेकिन किसी खेमे में बंधा हुआ नहीं दिखता.

बैतूल लोकसभा सीट स्वतंत्रता के बाद से ही बनी हुई है

सुभाष आहूजा : बैतूल में भाजपा का पहला परचम लहराने वाले नेता

राजीव खण्डेलवाल

जनता पार्टी (भाजपा) का बैतूल लोकसभा का संसद में पहला झंडाबरदार सूर्यपुत्री मां ताप्ती की उद्गम स्थली और सतपुड़ा की पर्वतमालाओं से घिरी, महाराष्ट्र की सीमा से लगी बैतूल लोकसभा सीट स्वतंत्रता के बाद से ही बनी हुई है. यद्यपि समय-समय पर इसकी सीमाओं में परिवर्तन अवश्य हुए हैं. पहले यह बैतूल छिंदवाड़ा लोकसभा सीट कहलाती थी. अब बैतूल हरदा लोकसभा सीट कहलाती है. पहले यह सामान्य सीट थी और 2009 में आरक्षित होकर आदिवासी हो गई. 1952 से लेकर 2024 तक 72 वर्ष के संसदीय सफर में 1977 के पहले तक बैतूल लोकसभा क्षेत्र का कभी भी स्थानीय तो छोड़िए क्षेत्रीय निवासी भी संसद नहीं बन पाया हमेशा नागपुर पहले तीन बार भीखूलाल चांडक फिर दो बार नरेन्द्र कुमार साल्वे सुभाष आहूजा ही ऐसे पहले शख्स थे. आपातकाल के बाद हुए वर्ष 1977 के लोकसभा चुनाव में न केवल पहला स्थानीय सांसद होने का गौरव प्राप्त किया बल्कि कांग्रेस की लगातार जीत के सफर को रोक कर जनता पार्टी जिसके जनसंघ घटक के सदस्य सुभाष आहूजा थे, जो बाद में भाजपा में परिवर्तित हुई, जनता पार्टी तथा आज की भाजपा कहलाने वाली पार्टी के वे प्रथम संसद सदस्य बैतूल लोकसभा के बनेद्य 27 साल की उम्र में हुए लोकसभा के सबसे युवा सदस्य होने का तत्समय का भी रिकॉर्ड उनके नाम से ही है. युवा मोर्चा के वे राष्ट्रीय अध्यक्ष भी रहे.

मुझे आज भी वे क्षण याद आते हैं, जब लोकसभा चुनाव की घोषणा हुई थी. और चुनाव लड़ने के लिए हमारे द्वारा डॉक्टर त्रिलोकी नाथ भार्गव के घर (हाथी बंगला) बैठक बुलाई गई थी. मात्र 9 लोगों की उपस्थिति में से 7 लोगों ने मजबूरी बताते चुनाव लड़ने से मना कर दिया था. आपातकाल में मीसा में जेल में रहने वाले सुभाष और मुझसे, बाकी लोगों ने चुनाव लड़ने बाबत तक कहा नहीं था. तब सुभाष भाई ने खड़े होकर कहा यदि कोई तैयार नहीं है और बलि का बकरा ही बनना है, तो मैं तैयार हूं. तब वी के आनंद (हरदा) द्वारा जनता पार्टी के चुनाव चिंह हल पर किसान चुनाव लड़ने के इनकार करने पर सुभाष के साहस और जनसंघ के प्रति उनकी निष्ठा ने बैतूल से पहली बार जनता पार्टी का विजयी झंडा लहराया.

सुभाष भाई के बाद कई चुनाव लडे व हारे भी. लेकिन पार्टी का झंडा व दरी के चार कोने में से एक कोना वे एक कार्यकर्ता के रूप में हमेशा उठाते रहे. जीवन पर्यन्त पार्टी के प्रति उनकी कर्मठता, निष्ठा व सक्रियता बनी रही. एक सांसद पूर्व सांसद अथवा एक नेता के रूप में नहीं, बल्कि एक कार्यकर्ता के रूप में, सिपाही के रूप में वह अंतिम समय तक जब तक स्वस्थ रहे, पार्टी संगठन के लिए कार्य करते रहे. सत्ता की भावना से कभी कदम आगे नहीं बढाया ''संगठन ही सर्वोपरि है यह मूल मंत्र उनकी राजनीति का केन्द्र बिन्दु रहा.

सुभाष आहूजा

नरेंद्र कुमार साल्वे

असलम शेर खान

ज्योति धुर्वे

दुर्गादास उइके

आरिफ बेग

विजय कुमार खण्डेलवाल (मुन्नी भैया)

वर्ष 77 के बाद लम्बे समय के बाद वर्ष 89 में बैतूल लोकसभा से भाजपा का झंडा पुन: आरिफ बेग ने फहराया. मैं उनका चुनाव संचालक था. वर्ष 1984 से लेकर 1996 तक लगातार अल्पसंख्यक मुस्मिल गुफराने आजम, असलम शेर खान, आरिफ बेग़ तीनों भोपाल के थे चुनाव जीतकर एकतरफा मुस्लिम रिर्जव सीट बना दी थी. परन्तु वर्ष 1996 में विजय कुमार खंडेलवाल (मुन्नी भैया) ने फिर भाजपा की नींव नये सिरे से रखकर विजय का जो झंडा गाढ़ा व लगातार चार बार लोकसभा चुनाव जीतकर भाजपा की नींव को मजबूत किया. उनकी मृत्यु की पश्चात उनके सुपुत्र हेमंत खंडेलवाल जो वर्तमान भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष है, ने भी उस विजय को बरकरार रखा. तत्पश्चात ज्योति धुर्वे व वर्तमान में केंद्रीय मंत्री दुर्गादास उइके ने लोकसभा में झंडा उठाये हुए है.

निश्चित रूप से आज भाजपा बैतूल संसदीय क्षेत्र में बहुत मजबूत दिख रही है. उसकी प्रथम जीत का स्वाद जिले की जनता को सुभाष आहुजा ने ही दिलवाया था. इस जीत का लगातार स्वाद विजय कुमार खंडेलवाल की 96 की जीत से जो प्रारंभ हुआ है, वह आज तक बदस्तूर जारी है.

उपराष्ट्रपति का चुनाव

सीपी राधाकृष्णन एनडीए के प्रत्याशी

जगदीप धनखड़ के अचानक इस्तीफे के बाद अटकलों का बाजार गर्म था कि अगला उपराष्ट्रपति कौन होगा और क्या उसका संबंध आरएसएस से होगा? आखिर इन बातों पर विराम लग गया. बीजेपी ने महाराष्ट्र के राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन को उपराष्ट्रपति का प्रत्याशी बनाया है, जिनका आरएसएस से पांच दशक से भी अधिक का संबंध है. राधाकृष्णन की जीत मात्र औपचारिकता प्रतीत हो रही है, क्योंकि संसद में बीजेपी व एनडीए में उसके सहयोगी दलों के पास 427 सांसद हैं, जबकि जरूरत केवल 392 की है. शायद इसीलिए बीजेपी चाहती है कि बतौर उपराष्ट्रपति राधाकृष्णन का चयन सर्वसम्मति से हो जाए यानी विपक्ष अपना कोई उम्मीदवार न उतारे. इस समय जो राजनीति चल रही है उसे देखते हुए लगता है कि प्रतीकात्मक चुनाव के लिए विपक्ष अपना प्रत्याशी मैदान में उतार सकता है. खबरें ऐसी भी हैं कि विपक्ष अपना विरोध जताते हुए इस चुनाव में हिस्सा ही न ले. चंद्रपुरम पोन्नुसामी (सीपी) राधाकृष्णन का जन्म 20 अक्टूबर 1957 को त्रिउप्पुर, तमिलनाडु में हुआ था. अगर उनका चयन हो जाता है, तो वह जगदीप धनखड़ (जाट) के बाद देश के दूसरे ओबीसी उपराष्ट्रपति होंगे और एस राधाकृष्णन व आर वेंकटरमण के बाद तमिलनाडु से इस पद पर बैठने वाले तीसरे व्यक्ति होंगे. राधाकृष्णन जब 17 साल के थे तभी से वह आरएसएस और भारतीय जनसंघ बाद में बीजेपी से जुड़े हुए हैं.

वह 1974 में जनसंघ की तमिलनाडु इकाई की एग्जीक्यूटिव कमेटी के सदस्य चुने गए. उन्होंने तमिलनाडु में बीजेपी व अन्ना द्रमुक के बीच चुनावी गठजोड़ कराने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की. इस समझौते की बदौलत तमिलनाडु में पहली बार बीजेपी के जो तीन प्रत्याशी चुनाव जीते उनमें से एक राधाकृष्णन स्वयं थे. तमिलनाडु बीजेपी के अध्यक्ष (12 मई 2003 से 22 सितंबर 2006) रहे राधाकृष्णन ने कोयंबटूर लोकसभा सीट को 1998 में 150,000 से भी अधिक मतों से जीता, लेकिन 1999 में उनका जीत का अंतर घटकर 55,000 रह गया और इस सीट से वह 2014 व 2019 में चुनाव हार गए. तमिलनाडु बीजेपी का अध्यक्ष रहते हुए राधाकृष्णन ने 93 दिन की 19,000 किमी लंबी रथ यात्रा निकाली, जिसमें उन्होंने नदियों को जोड़ने, छुआछूत को खत्म करने और भारत में आतंकवाद के विरुद्ध अभियान चलाने की वकालत की थी. 12 फरवरी 2023 को राधाकृष्णन को झारखंड का राज्यपाल नियुक्त किया गया और टी सौंदर्यराजन के इस्तीफे के बाद उन्हें 19 मार्च 2024 को तेलंगाना के राज्यपाल और पोडुचेरी के लेफ्टिनेंट गवर्नर का अतिरिक्त कार्यभार भी सौंपा गया. इसके बाद 27 जुलाई 2024 को राधाकृष्णन को महाराष्ट्र का राज्यपाल नियुक्त किया गया. अब 17 अगस्त 2025 को बीजेपी ने राधाकृष्णन को अपना उपराष्ट्रपति प्रत्याशी बनाया है. बीजेपी का कहना है कि राधाकृष्णन का सर्वसम्मति से चयन कराने के लिए उसने पिछले सप्ताह विपक्षी दलों से बात की है और वार्ता जारी रहेगी. विपक्षी दल अगर राधाकृष्णन के नाम पर सहमत नहीं भी होते हैं, तो भी उनका उपराष्ट्रपति बनना लगभग तय ही है, क्योंकि एनडीए के पास पर्याप्त संख्या बल है.

एक तीर से दो निशाने

राधाकृष्णन को उपराष्ट्रपति प्रत्याशी बनाकर बीजेपी एक तीर से दो निशाने साधने का प्रयास कर रही है. आरएसएस को उसकी पसंद का उपराष्ट्रपति देकर बीजेपी आलाकमान ने अपने लिए पार्टी का अध्यक्ष पद आरक्षित कर लिया है. आरएसएस जेपी नड्डा के केंद्र में मंत्री बनाए जाने के बाद से ही इस बात पर बल दे रहा था कि उसकी पसंद के व्यक्ति को बीजेपी का अध्यक्ष बनाया जाए और इस सिलसिले में संजय जोशी का नाम बार-बार आगे बढ़ाया जा रहा था. बीजेपी आलाकमान को यह स्वीकार नहीं था, इसलिए नड्डा ही अध्यक्ष बने हुए थे. इस गतिरोध को दूर करने के लिए रास्ता यह निकाला गया कि उपराष्ट्रपति पद पर आरएसएस की पसंद के व्यक्ति को आसीन कर दिया जाए और बीजेपी अध्यक्ष पद को बीजेपी आलाकमान (नरेंद्र मोदी व अमित शाह) की पसंद पर छोड़ दिया जाए, जो किसी भी सूरत में यह नहीं चाहते कि पार्टी पर उनकी पकड़ ढीली पड़े. प्रधानमंत्री ने लाल किले से जो आरएसएस की तारीफ की उसे इसी पृष्ठभूमि में समझना चाहिए कि बीजेपी आलाकमान व आरएसएस के बीच 'समझौता' हो गया है. बीजेपी को एक ऐसे प्रतीक की जरूरत थी जिसके सहारे वह तमिलनाडु सहित दक्षिण के अन्य राज्यों में अपनी तेजी से खिसकती जमीन को फिर से हासिल कर सके.

–शाहिद ए चौधरी

वोटों के दलालों का पर्दाफाश किया जाए

संस्कृत में सूक्ति है- सत्यं वद प्रियं वद (सच बोलो जो प्रिय या मीठा लगे. ऐसा सच मत बोलो जो लोगों का दिल दुखाए) राहुल गांधी और शरद पवार के बाद संजय राऊत ने वोट चोरी के दावे की अपने तरीके से पुष्टि की. इन तीनों के बाद प्रहार जनशक्ति पार्टी के अध्यक्ष बच्चू कडू भी मैदान में कूद पड़े. जब उनका नाम कडू है तो मीठी बात कैसे बोलेंगे? चुनाव आयोग की हैरानी-परेशानी बढ़ाने वाली इन नेताओं की बयानबाजी संकेत देती है कि वोटों के दलालों का अस्तित्व है, जो नेताओं के पास पहुंचकर उन्हें लुभावने ऑफर देते हैं. कोई कहता है कि मैं 160 सीटों पर जीत दिलवा सकता हूं तो कोई कहता है कि मैं विरोधियों के 10,000 वोट कम करवा दूंगा. पैसा दो और बदले में हमारी सेवाएं लो! अगर यह दलाल चुनाव के नतीजों को रूबिक क्यूब के समान इतना घुमा सकते हैं तो फिर चुनाव आयोग किस मर्ज की दवा है! ऐसे बिचौलियों का पर्दाफाश होना चाहिए. आरोप लगाने वाले नेता बताएं कि सीटें जिताने और विरोधी के वोट कम करने का लुभावना ऑफर देने वाले बाजीगर कौन थे? यह बात अलग है कि उनका प्रस्ताव किसी नेता ने स्वीकार नहीं किया लेकिन ऐसे वोटों या सत्ता के दलालों को बेनकाब किया जाए. कहीं ये ऐसे ठग तो नहीं हैं कि नेताओं से मोटी रकम लेकर चंपत हो जाएं और फिर नजर ही न आएं. ऐसे लोग पवार के पास आते हैं जो उन्हें राहुल के पास भेज देते हैं. राहुल उनका प्रस्ताव ठुकरा देते हैं लेकिन वोट चोरी का दावा कर सनसनी फैला देते हैं. यूबीटी प्रवक्ता व सांसद संजय राऊत कहते हैं कि वो दो लोग उद्धव ठाकरे से भी मिले थे. अब ओमप्रकाश उर्फ बच्चू कडू ने ऐसे दलालों की सक्रियता के बारे में दावा करते हुए कहा कि विधानसभा चुनाव से पहले मुझ से। से ऐसे 10,000 वोटरों की सूची मांगी गई थी जो मुझे वोट नहीं देते. मुझ से कहा गया था कि इन लोगों के नाम मतदाता सूची से काट दिए जाएंगे और उनकी जगह 10,000 ऐसे लोगों के नाम सूची में डाल दिए जाएंगे जो मेरे समर्थक वोटर होंगे. बच्चू ने कहा कि मैं अपनी जीत के प्रति आश्वस्त था इसलिए मैंने उन लोगों का ऑफर ठुकरा दिया.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

जिसे अपना मतलब याद आए वही जाकर अन्ना को जगाए

पड़ोसी ने हमसे कहा, निशानेबाज, सोए हुए व्यक्ति को जगाया जा सकता है, लेकिन जो सोने का ढोंग कर रहा हो, उसे कोई कैसे जगाए?

हमने कहा, आप किसके सोने और जागने की बात कर रहे हैं? कहावत है जब जागे तभी सवेरा! यह भी कहा गया है कि जो सोवत है सो खोवत है, जो जागत है सो पावत है. लोग गाढ़ी नींद में बेखबर सोए रहते हैं और रात में चोरी हो जाती है. इसी वजह से चौकीदार रात में पहरा देते हुए बार-बार लाठी पटककर चिल्लाता है- जागते रहो! आपने गीत सुना होगा- जागो मोहन प्यारे!

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, इस समय मोहन को नहीं, समाजसेवी अन्ना हजारे को जगाने की कोशिश की जा रही है. पुणे में बैनर लगाकर कहा गया है- अन्ना अब तो उठो ! कुंभकर्ण भी लंका के लिए उठा था, आप अपने देश के लिए उठिए. देश में वोटों की चोरी हो रही है. भ्रष्टाचार बढ़ रहा है. लोकतंत्र खतरे में है. आप जैसे समाजसेवी चुप कैसे रह सकते हैं? अन्ना दिल्ली का जंतरमंतर फिर से आपका जादू देखने के लिए आतुर है.

हमने कहा, अन्ना हजारे समझ गए हैं कि चतुर लोग अपना उल्लू सीधा करने के लिए उनका इस्तेमाल करते आए हैं. 2014 से पहले उनके भ्रष्टाचार विरोधी जनलोकपाल आंदोलन की वजह से बीजेपी को सत्ता में आने में मदद मिली थी. उनके आंदोलन में शामिल अरविंद केजरीवाल ने आम आदमी पार्टी बनाई और दिल्ली के सीएम बने. किरण बेदी पुडुचेरी की उपराज्यपाल बना दी गई थीं. अन्ना को लगा कि उनके चेले केजरीवाल रास्ता भटक गए हैं. अन्ना हजारे के अनशन आंदोलन के समय दिल्ली में भारी भीड़ हुई थी. इसे उन्होंने अपनी लोकप्रियता मान लिया था लेकिन जब मुंबई में अनशन किया तो भीड़ नदारद थी. बाद में पता चला कि दिल्ली की भीड़ संघ कार्यकर्ताओं ने की थी जबकि मुंबई में कोई नहीं आया. अन्ना समझ गए हैं कि आंदोलन कराने के लिए उन्हें मोहरा बनाया जाता है. बाद में हालत यह होती है कि मेहनत करे मुर्गी, अंडे खाएं फकीर! इसलिए पिछला अनुभव देखते हुए इस बार किसी के चक्कर में नहीं फंसेंगे. अन्ना ने बैनर लगाने वालों को जवाब दिया कि यह गलत है कि उम्र के 90वें वर्ष में मैं काम करूं और तुम लोग सोए रहो.

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 11998

-डॉ सागर खादीवाला

बाएं से दाएं

1. 2. चाशनी में मिले गुलाब के फूलों की औषधि (उर्दू) 6. विवाह 8. सर्वथा नवीन, वह फल-फूल जो अभी पेड़ से तोड़ा गया हो 9. तख्ती, शैली, रीति 10. वचन, इकरार (उर्दू) 11. मुंह में चबाने के लिए निकली हुई हड्डियां, दशन 12. मूल-युक्ति 13. पत्नी का भाई 15. कड़ुआ, अप्रिय (सं.) 17. असफलता 19. कसक, दर्द, छाती या कलेजे का दर्द 20. कार्य, काम 22. किसी आधार से नीचे की ओर टंगना, काम का अधूरा पड़ा रहना 26. संबंध, रिश्ता 27. ओहदा, पांव 28. शालि जिसमें से चावल निकलता है

ऊपर से नीचे

1. रात (सं.) 3. बेल 4. खाकी रंग का, कंजी आंखों वाला 5. छोटा घंटा 7. भीत, किसी वस्तु का ऊपर उठा हुआ घेरा 9. पाप, गुनाह (सं.) 12. क्रोध 13. स्वच्छ, निर्मल 14. एक प्रसिद्ध रत्न, रक्त के रंग का 16. थोड़ा, तनिक, जरा 17. व्याकुल, बेचैन 18. देखना, अवसर की प्रतीक्षा या घात में रहना 21. गंवाना, भूल से कोई वस्तु कहीं पर छोड़ देना 23. पानी के टपकने का शब्द 24.

Solution 11997

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में स्त्री पक्ष से नवीन समाचारों की प्राप्ति होगी. सुख प्राप्त होगा. नवीन मित्र से भेंट होगी. व्यापार के क्षेत्र में यात्रा की रूपरेखा बनेगी. वर्ष के प्रारंभ में शासन सत्ता का लाभ प्राप्त होगा. शिक्षा में रूचि रहेगी. मित्रों एवं भाईयों के सहयोग से राजनीतिक लाभ प्राप्त होगा. वर्ष के अन्त में भूमि भवन संबंधी विवाद का सामना करना पडेगा. व्यर्थ के वाद विवाद एवं मतभेद बढेंगे.

मेष ओर वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को शासन सत्ता का सुख प्राप्त होगा. शिक्षा में रूचि रहेगी. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को व्यर्थ वाद विवाद हो सकता है. शिक्षा में व्यवधान के कारण मानसिक परेशानी होगी. सिंह राशि के व्यक्तियों को मित्र एवं भाईयों के सहयोग से राजनैतिक लाभ होगा. व्यापार के क्षेत्र में यात्रा का योग है. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को मित्र से भेंट होगी. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को भूमि भवन संबंधी विवाद का सामना करना होगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक स्वस्थ्य सुन्दर, अच्छे संस्कारों और विचारों का होगा. स्वास्थ्य ठीक रहेगा. बचपन में ज्वर, अतिसार, निमोनिया, आदि से तकलीफ होगी. किसी विशेष विज्ञान कला आदि का ज्ञाता होगा. किसी के दबाव में आकर काम नहीं करेगा.

मेष- लापरवाही से नुकसान उठाना पड़ सकता है. किसी समारोह में शामिल होंगे. घरेलू वातावरण सुखद एवं आनन्ददायक रहेगा. व्यवसाय में लाभ प्राप्त होगा.

वृषभ- विद्यार्थी वर्ग के लिये समय अच्छा है. उन्नति के अवसर मिलेंगे. शारीरिक कष्ट एवं कार्य की व्यस्तता रहेगी. नये कार्यो की रूपरेखा बनेगी.

मिथुन- रूखे व्यवहार से करीबी नाराज होंगे. वाणी पर नियंत्रण रखें. आध्यात्मिक कार्यो में उत्साह बना रहेगा. भाईयों की मदद मिलेगी. आत्मीयता बढेगी.

कर्क- कार्यक्षेत्र में किये गये बदलाव का अच्छा लाभ मिलेगा. सुख सुविधा पर खर्च होगा. राजकीय कार्यो नौकरी आदि में व्यस्तता रहेगी.

सिंह- आयात निर्यात के कार्य में अच्छे लाभ की संभावना है. आय के साधनों में वृद्धि होगी. किये गये कार्य का लाभ प्राप्त होगा. पारिवारिक कार्य संतोषप्रद रहेगा.

कन्या- मेहनत के अनुकूल लाभ मिलना मुश्किल है, अध्ययन, कला के क्षेत्र में सफलता मिलेगी. पारिवारिक कार्यो पर ध्यान देना अति आवश्यक है.

तुला- बुजुर्गो के मार्गदर्शन से अच्छी सफलता मिलेगी, अहंकार, मन में विशेष प्रसन्नता रहेगी. कामकाज में उत्साह बना रहेगा. दौड़धूप से बचना चाहिये.

वृश्चिक- जल्दबाजी में लाभदायक योजना का फायदा कम मिलेगा. अधिक भरोसे से बचें. कौटुम्बिक सुख मिलेगा. पूज्य व्यक्ति की सलाह लेना उपयोगी रहेगा.

धनु- अटके कार्य मित्रों के सहयोग से पूरे होंगे. पुराने मामले सुलझेंगे. आपके साहस और पराक्रम में वृद्धि होगी. कोई भी कामकाज कल पर न टालें. परिश्रम अधिक होगा.

मकर- जनहित को ध्यान में रखकर निर्णय करें. प्रियजन से मुलाकात सुखद रहेगी. प्रापर्टी के कार्यो में सावधानी रखें. किसी अनजान व्यक्ति से मुलाकात होगी.

कुम्भ- कार्य क्षेत्र में बर्चस्व बढेगा. मित्रों से किया गया वादा पूरा नहीं होगा. विद्या के क्षेत्र में सफलता मिलेगी. आर्थिक एवं व्यापारिक कामकाज पूरा होगा.

मीन- सामाजिक जीवन में खास पहचान बनेगी. धार्मिक यात्रा संभव है. मन में विशेष प्रसन्नता रहेगी. निजी पुरूषार्थ रहेगा. विरोधी वर्ग उग्र रूप धारण कर सकता है.

उदयकालीन ग्रह चाल

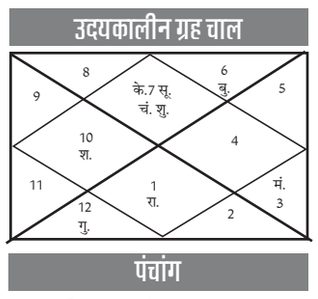

पंचांग

रा.मि. 29 संवत् 2082 भाद्रपद कृष्ण द्वादशी बुधवासरे दिन 2/2, पुनर्वसु नक्षत्रे रात 1/34, सिद्धि योगे रात 8/18, तैतिल करणे सू.उ. 5/36 सू.अ. 6/24, चन्द्रचार मिथुन रात 7/46 से कर्क, पर्व- प्रदोष व्रत, शु.रा. 3, 5, 6, 9, 10, 1 अ.रा. 4, 7, 8, 11, 12, 2 शुभांक- 5, 7, 1.

व्यापार भविष्य

भाद्रपद कृष्ण द्वादशी को पुनर्वसु नक्षत्र के प्रभाव से सरसों, अलसी, अरंडी, बिनौला, घी, मूँगफली, तेल, गुड़, के भाव में तेजी का रूख रहेगा. रूई, कपास, सूत लकडी, से बनी वस्तुओं में वृद्धि होगी. भाग्यांक 3721 है.

SUDOKU 7130

5		9		8	3	2		
	2		4					8
3	8		5	2	6	1		
	7						9	5
9		3	6		8	7		4
2	6						1	
		5	2	7	1		8	6
6					4		7	
		8	9	6		4		2

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सु-दोकू 7129

8	2	5	3	6	7	9	1	4
4	6	1	8	9	2	3	7	5
3	7	9	1	5	4	6	8	2
1	3	7	4	2	9	5	6	8
6	5	2	7	1	8	4	9	3
9	8	4	6	3	5	1	2	7
2	4	6	9	8	3	7	5	1
5	1	3	2	7	6	8	4	9
7	9	8	5	4	1	2	3	6